आपातकाल में सृजन फुलवारी

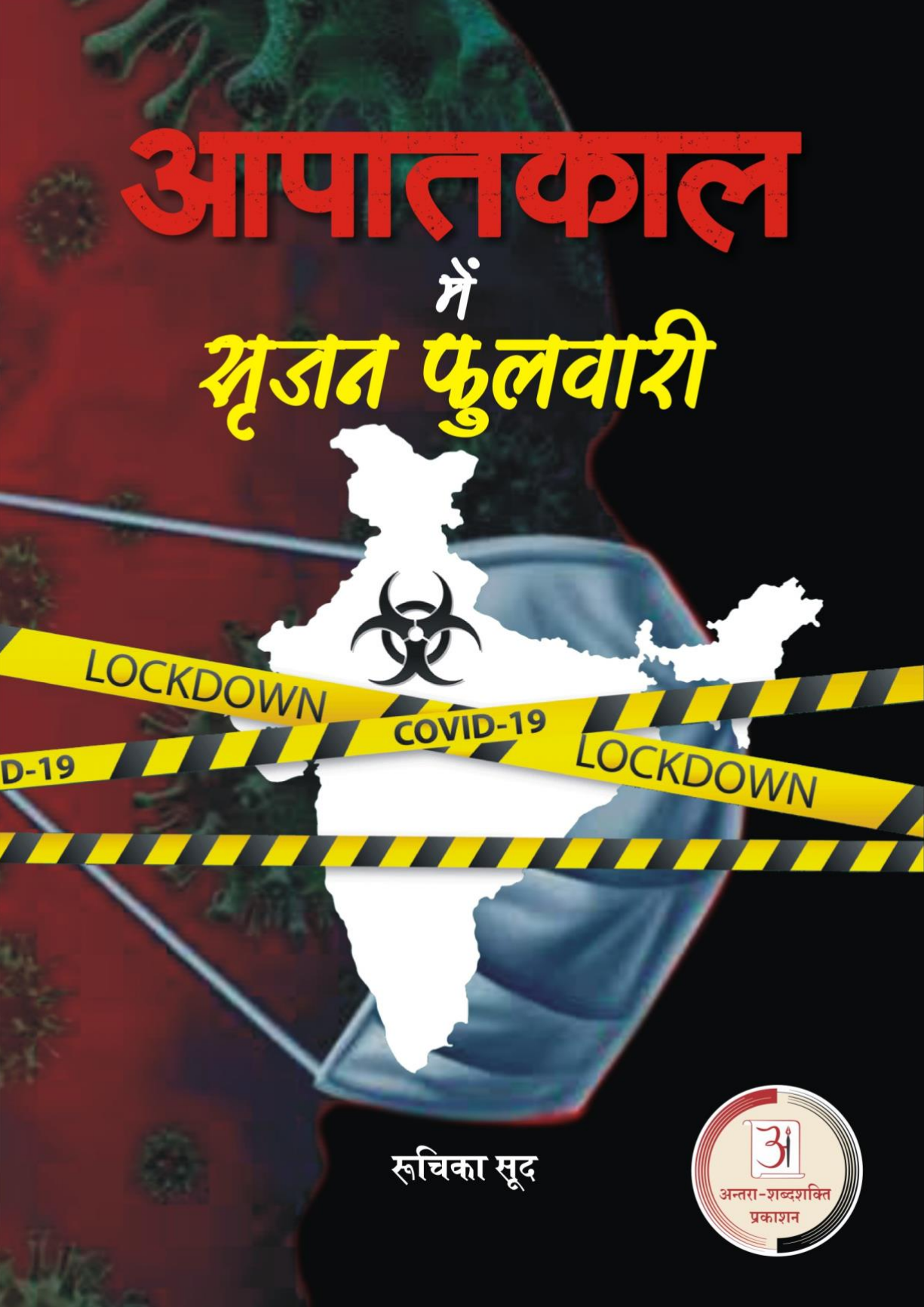

रूचिका सूद

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

रुचिका सूद

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-175-6

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण-2020, रुचिका सूद

मूल्य-50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RUCHIKA SOOD

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	वक्त	6
2.	आशियाना	7
3.	गरीबी	8
4.	कोरोना	9
5.	कार्टून	10
6.	माँ	11
7.	तूने मदिरा क्यों पी	12
8.	पतंग	13
9.	साईं बाबा	14
10.	वृक्ष	15
11.	पुस्तक	16
12.	तिरंगा	17
13.	लॉकडाउन	18
14.	ख्वाब	19
15.	नारी की व्यथा	20
16.	बेटी	21

वक़्त

हर इक की एक कहानी है
हर शख्स की जुबानी है
वक्त बदलता जाता है
समय के साथ-साथ
हर पन्ना पुराना होता जाता है
और नया संसार बनता जाता है
पर बीता कल नहीं आता है
वक्त बदलता जाता है
और इतिहास बनता जाता है
पर लौटकर नहीं आता
कल पर मत जीना प्यारे
वक्त का अनुसरण कर ले
वक्त के संग चल ले
वक्त को ही समझ ले
वक्त कभी न रुकेगा
वक्त बदलता जाता है
और इतिहास बनता जाता है!

आशियाना

एक चिड़िया की चाह है
तिनका-तिनका कर घर बनाती है
फिर अपने बच्चों के साथ सो जाती है
हर पल सुरक्षा करती है
गरमी, धूप, बरसात मे
हर दिन नये तिनके लाती है
और नया आशियाना बनती है
तेज बरसात में भी
फिर उठ खड़ी होती है
उस उत्साह से
और फिर नया आशियाना बनाती है
नन्हें-नन्हें पंखों से
ऊँचे-ऊँचे शिखर पर
फिर उम्मीद की किरण लाती है
और नया आशियाना बनाती है!

गरीबी

एक नन्हे की पुकार थी
वक़्त की ये मार थी
जन्मभूमि भी न सदाबहार थी
खाली थी थाली
और न थी दूध की प्याली
बचपन भी उदास था
और न कोई खिलौना पास था
सूने मन में
ख्वाहिशों के मेले थे
पर कपड़ों का अभाव था
और कुछ भी न पास था
बिना तेल के दिये
और बिना आटे की थी रोटी
बिक चुका था कोना-कोना
पर भूखे पेट कैसे था सोना
माँ की वो फटी साड़ी
पिता की लंबी बीमारी
भगवान ने न सुनी हमारी
दरिद्रता और बीमारी
क्यों नहीं दूर की समस्या हमारी
एक नन्हे की पुकार थी
वक़्त की ये मार थी!

कोरोना

हमें कोरोना से लड़ना है
सही दिशा की ओर बढ़ना है

पहले से ही सतर्क रहना है
मुँह पर मास्क व हाथों को
बार बार धोना है
घर पर रह कर क्वारंटाइन करना है

हमें कोरोना से लड़ना है
सही दिशा की ओर बढ़ना है

इस सृष्टि को पहले जैसा करना है
मुक्त करना है कोरोना से सबको
देश को आगे बढ़ना है
जीवन का स्तर उठाना है
प्रधान मंत्री के निर्देशों का पालन करना है

हमें कोरोना से लड़ना है
सही दिशा की ओर बढ़ना है!

कार्टून

दुख मे भी हँसाते जाते हैं
जब नई-नई कला कृतियां दिखाते हैं
बच्चे, बूढ़े हर उम्र के लोग
देख अपना दुख भूल जाते हैं
डोरेमोन, शिनचेन, शिवा
अनोखी दुनिया में ले जाते हैं
बन्दबुद्ध और बुडबक
स्कूल की सेर कराते हैं
और फिर बचपन की ओर ले जाते हैं
दुख में भी हँसते जाते हैं
औगी एंड द क्रॉकरोच मे
बार बार मर कर भी जिंदा हो जाते हैं
कृष्णा और बलराम की
नयी नयी एपिसोड दिखाते हैं
और फिर बचपन की ओर ले जाते हैं
नई-नई आकृति में ढल कर
बहुत बहुत हँसाते है
अद्भुत पात्र में भी
नई-नई कहानियाँ दिखाते हैं
और नई सीख भी दे जाते हैं
दुख में भी हँसाते जाते हैं
जब नई-नई कला कृतियां दिखाते हैं!

माँ

ममता के आंचल में छुपाती है
लोरी सुनाकर सुलाती है
हर मुश्किल में
राह दिखाती है
हर इम्तिहान से पढ़ाती है
गरमी में ठंडक का एहसास है तू
एक वृक्ष की भांति
ममता की छांव है तू
तेरे चरणों में सुख की अनुभूति है
ममता के आंचल में छुपाती है
लोरी सुनाकर सुलाती है
बीमारी में
डाक्टर बन जाती है
दुखों में भगवान बन जाती है
हर तकलीफ से बचाती है
खुद भूखी रह कर
हमें खिलाती है
और खुद जग-जग कर
हमें सुलाती है
अपनी मुस्कान देकर
हमें हँसाती है
सुख का सागर है तू
जिससे सबकी प्यास बुझती है
ममता के आंचल मे छुपाती है
लोरी सुनाकर सुलाती है!

तूने मदिरा क्यों पी

तूने मदिरा क्यों पी
घर में छाया है अंधियारा
सूना पड़ा है आँगन सारा
बेफिक्री का मंजर है सारा
ना भूख है ना प्यास है
दुखों का ये संसार है
उजड़ गया है ये आशियाना
श्मशान लगता है ज़माना
बेबस माँ और बच्चों की किलकारी
तूने मदिरा क्यों पी
घर पर नहीं थी रोटी हर आस थी छोटी
बच्चों को नहीं मिलती थी रोटी
हर एक ने हाथ छोड़ा था
और मन का विश्वास तोड़ा था
दुखों का पहाड़ था
मन इतना उदास था
हर दुख अपना सा लगता है
हर झूठ भी सच लगता है
इस उजड़े आशियाने में
तूने मदिरा क्यों पी!

पतंग

ये महत्वाकांक्षा की डोर है
ये सिर्फ पतंग नहीं
ये जंग की बुनियाद है
ये सिर्फ प्रतिस्पर्धा नहीं
ये मन की प्रीत है
महत्वाकांक्षा की डोर है
ये सिर्फ पतंग नहीं
जीवन की शुरुआत है
बच्चों के लिए एक खेल है
पर कुछ दिलों का मेल है
रंगबिरंगी मानो
रंगों से सिखलाती है
रंगों की भाषा
ये सिर्फ एक खेल नहीं
हर उम्र में
पतंग की अलग-अलग परिभाषा
ये महत्वाकांक्षा की डोर है
ये सिर्फ पतंग नहीं!

साईं बाबा

साईं तेरे चरणों में, सुख और शांति पाई
बाबा तेरे चरणों में, सारी दुनिया समाई

हर रूप में, हर रंग में,
हर कली में है तू
हर सुबह में, हर शाम में,
हर पल में है तू
तेरे नाम अनेक हैं साईं
पर एक ही रूप है तू
साईं तेरे चरणों में
सुख और शांति पाई
बाबा तेरे चरणों में, सारी दुनिया समाई

हर जीव में, हर प्राणी में,
हर मन में है तू
हर भक्त में, हर वक़्त में,
हर गीत में है तू
हर एक को तुझ पर मान है
हर एक की तू जान है
हर दिल में तेरा वास है
हमको तो तुझ पर विश्वास है
साईं तेरे चरणों में
सुख और शांति पाई
बाबा तेरे चरणों में, सारी दुनिया समाई!

वृक्ष

मत काटो-मत काटो
इन वृक्षो को
मैं तुम्हारा जीवन का एक हिस्सा हूं
जानते हो तुम्हें कितना कुछ देता हूँ
मुझसे हरी ये सृष्टि है
धूप, बारिश से
बचाता हूँ मैं
अपने फलों से
ताक़त दिलाता हूँ मैं
सब्ज़ी, अनाज सबको
उपलब्ध कराता हूँ मैं
इतने काम आता हूँ मैं
फिर क्यों करते मेरा दुरुपयोग हो
मत काटो-मत काटो
इन वृक्षो को
तुम्हारा भी जीवन सुना कर जाऊँगा
मुझ पर ही निर्भरहो
समझो ये जान लो
प्रकृति हूँमैं समाहल लो
कल मैं नहीं होंगा
तो तुम्हारा अस्तित्व भी न रहेगा
समझो ये जान लो
मत काटो-मत काटो!

पुस्तक

हे, पुस्तक
ज्ञान देय मय
अंधकार से निकाल
उजाले की ओर ले
अपने ज्ञान के प्रकाश से
हमे प्रकाशित कर
अक्षरों की पहचान दे
बुद्धि और विवेक दे
सद्कर्मों की ओर चले
ऐसा निर्देश दे
अंधकार से निकाल
उजाले की ओर ले
जहाँ शब्दों का संचार हो
बुद्धि का विकास हो
प्रार्थना मेरी स्वीकार लो
हे पुस्तक,
ज्ञान देय मय
अंधकार से निकाल
उजाले की ओर ले!

तिरंगा

तीन रंगों वाला है झंडा
कहलाता है ये तिरंगा
इसकी अलग ही शान है
हर भारतीय को इस पर मान है

सुख, शांति, समृद्धि समझाता है
वही हरियाली का प्रतीक है
तीन रंगों वाला ये झंडा कहलाता है ये तिरंगा
इसको नमन करते हो और ये जान लो

हर भारतीय की पहचान है
15 अगस्त, 26 जनवरी
राष्ट्रीय पर्व तिरंगा
फहराते हुए मनाते है सभी

नभ मस्तक झुका
वंदना करते है सभी
तीन रंगों वाला है झंडा
कहलाता है ये तिरंगा!

लॉकडाउन

लॉक है सारी दुनिया

बाजार, दुकाने, सिनेमाघर
चुप-चाप बैठे हैं यूं डरे
सुनी है सारी सड़के
ना गाड़ियों का शोर
ना लोगों का शोर
चुप चाप है सारे
लॉक है सारी दुनिया

पर भगवान की रहमत पर
कोई लॉक नहीं
नदियों के बहाव में
कोई लॉक नहीं
हवा की सनसनाहट पर
कोई लॉक नहीं
जीवों की हलचल पर
कोई लॉक नहीं
पर लॉक है दुनिया सारी!

ख्वाब

ख़्वाबों का है ये मंज़र
कुछ बुरे कुछ अच्छा
और कुछ अदभुद
ख्वाब भी आ जाते
न भी बुलाओ
पर नींद में समा जाते हैं
अदभुद लोगों से मिला जाते हैं
काल्पनिक पात्र
अपनी अलग अलग
भूमिका निभा जाते है
ख्वाबों का है ये मंजर
बहुत अदभुद
पर बहुत डरावना
जो बिना सोचे
बिना देखे
परेशान कर जाते हैं
ख्वाबों का है मंजर!

नारी की व्यथा

कब तक सोचूंगी पर मैं न बोलूंगा
बचपन से जवानी तक चुप होकर सह लूँगी
पर मैं न बोलूंगा
जिंदगी के तूफान को हर हाल में झेलूँगी पर मैं न बोलूँगी
आखिर कब तक न बोलूँगी
बेटी, बहन बनकर मायके में रहना है
फिर पत्नी, माँ बनकर साथ चलना है
हर रिश्ते को निभाना है
चुप चाप सब कुछ सहते जाना हैं
चुप हो कर तूफान से लड़ते जाना हैं
हिन्दू धर्म को भी निभाना है
शादी के वचन को भी निभाना है
दर्द के मंजूर को छिपाना है
इसलिए चुप होकर सहलूँगी पर मैं न बोलूँगी
जिंदगी के तूफान को हर हाल में झेलूँगी पर मैं न बोलूँगी
क्या ज्ञानी के पास ही ज्ञान है
जिन्हें अपनी शक्ति पर मान है
अपने अनुभव से मुझे भी तो ज्ञान है
फ़िर क्यों न सुनता ज़मी आसमान है
कैसे कहूँअपनी व्यथा
बोलूँगी तो हर रिश्ता खोदूँगी
यह सोचकर खुद ही चुप होकर
सहलूँगी पर मैं न बोलूँगी
जिंदगी के तूफान को हर हाल में झेलूँगी पर मैं न बोलूँगी
आखिर कब तक न बोलूँगी!

बेटी

मातृत्व की छांव में ले
ममता की ओढ़नी में ले
सूखे पत्तों की टहनी सी मैं
मन में आई अटखेली सी मैं
सुने आँगन को भरती हुई
दिव्य ज्योति के जैसे जलती हुई
आने को उत्सुक हूँ मैं
मातृत्व की छांव मे ले
ममता की ओढ़नी मे ले
आखिर क्यों नहीं लेती तू
तेरा ही तो अंश हूँ मैं
तुझमें ही समाई हुई
तेरे दुखों को पहचान कर
तुझे अपना मान कर
मुझे भी तो अधिकार दे
जीने की आस दे
बेटी हूँअभिशाप नहीं
मातृत्व की छांव मे ले
ममता की ओढ़नी मे ले
माँ, तू भी तो एक बेटी है
फिर क्यों न मेरी सहेली है
तू जननी पालनहारी है
फिर क्यों न सुनती मेरी किलकारी है
मैं तेरे अंगना की फुलवारी हूँ
तेरे ही जीवन की क्यारी हूँ
मातृत्व की छांव मे ले
ममता की ओढ़नी मे ले!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

इस आपातकाल में अंतराशब्दशक्ति लगातार अहम भूमिका निभा रहा है स अपने शब्दों के माध्यम से श्रोताओ को निरंतर निराशा से निकाल रहा है और आत्मविश्वास बढ़ा रहा है, जहाँ लोग लॉकडाउन में रहकर अपना आत्मविश्वास खो रहे हैं व दुखद घटनाओं ने चारों ओर निराशा फैला रखी है। ऐसे आपातकाल में लेख एक ऐसा माध्यम है जो निरंतर नई उम्मीद उत्पन्न कर रहा है व जीवन में एक जोश भर रहा है। इस चुनौतीपूर्ण समय में हम सभी को एक जुट हो अपनी विचारधाराओं के द्वारा नया सृजन करना चाहिए। जिससे देश का कल्याण हो अंतराशब्दशक्ति निरंतर इसी ओर कार्यरत है।

इस आपातकाल में जहां डॉक्टर, नर्स, सफाईकर्मी, पुलिस और कईं संस्थायें अहम भूमिका निभा रही हैं और लोगों को प्रेरित कर रही हैं कि लॉकडाउन का पूरा पालन करें। ऐसे में अंतरा शब्दशक्ति अपने लेखों द्वारा लोगों को ये जंग जीतने के लिए प्रेरित कर रही है ताकि लोग शांति व सबुरी से अपना समय निकले व अपने अंदर छुपी प्रतिभा को निखारे। अब अंत में मैं अपने शब्दों के माध्यम से यह कहना चाहूँगी कि इस आपातकाल में आप भी अपने शब्दों द्वारा व अन्य किसी प्रतिभा द्वारा नया सृजन कर सकते हैं और देश को नई दिशा दे सकते हैं। जिस तरह अंतरा शब्दशक्ति निरंतर लोगों को प्रेरित कर रहा है आप लोग भी अपनी प्रतिभाओं द्वारा लोगों को प्रेरित कर सकते हैं।

रचनाकार

रुचिका सूद

Email- ruchikasood17000@gmail.com

Mobile - 8085823532

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-175-6

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/